कमला नेहरू महिला महाविद्यालय, भुबनेश्वर

हिंदी विभाग ; ई – पत्रिका

हिंदी भारती

अप्रैल – 2018

संपादक मंडली

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

उप – संपादक : कु. प्रियंका प्रियदर्शिनी परिडा

कु. शुभश्री शताब्दी दास

संपादकीय

आपके समक्ष " हिंदी भारती " का अप्रैल अंक प्रस्तुत है। यह अंक कोई विषेशांक ना हो कर सहज भावों की सरल अभिव्यक्ति है। इस अंक में अप्रैल महीने में हुए जलियंवाला बाग हत्याकाण्ड, डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर जी की जयंती के अवसर पर विशेष लेख हैं। साथ ही हैं विभाग के छात्राओं की कच्ची पक्की अभिव्यक्तियां। हम कोशिश करते रहें हैं कि हर अंक में हम आपको कुछ नया परोसें। इस अंक से आपके लिये हम हिंदी साहित्य से जुडी लघु फिल्मों और डॉक्युमेंट्री फिल्मों के यू ट्यूब लिंक साझा करेंगे ताकि आप हिंदी साहित्य के दृष्य रूपांतर का भी आनंद ले सकें।

" हिंदी भारती " कमला नेहरू महिला महाविद्यालय के हिंदी विभाग को अपनी समग्रता के साथ प्रस्तुत करता है। हिंदी भारती का यह आठवां अंक है। इस ई - पत्रिका की यही विशेषता है कि यह बिना रुके अविछिन्न चली आ रही है। आपने इसके हर अंक को सराहा है एवं आशा है आगे भी इसी सहृदयता से इसे अपना आशिर्वाद एवं स्नेह देते रहेंगे।

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

अनुक्रमणिका

क्र सं.	शीर्षक	विधा	नाम	पृ. सं.
1.	जालियाँवाला बाग हत्याकांड	लेख	संकलित	5
2.	रसखान	लेख	सुभश्री शताब्दि दास	11
3.	दुष्यंत कुमार त्यागी	लेखक परिचय	संकलित	14
4.	गज़ल	गज़ल	दुष्यंत कुमार त्यागी	16
5.	अब तो पथ यही है	कविता	दुष्यंत कुमार त्यागी	16
6.	हिन्दी कृष्ण - काव्यधारा की प्रमुख प्रवृतियाँ	लेख	स्तुति प्रज्ञा दास	17
7.	मेरा लक्ष्य	कविता	पिंकी सिंह	20
8.	मृत्यु नहीं है जीवन का अंत	लेख	सोनालि राउत	21
9.	डॉ बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर	जीवनी	सोनिया नायक	23
10.	सुदामा पांडेय 'धूमिल'	लेखक परिचय	संकलित	26
11.	बिहारी	लेख	निहारिका मिश्र	28
12.	अधूरा सच	संकलित	शरीफा शरवारी	30
13.	नमक का दरोगा	यू ट्यूब लिंक		31
14.	यादों के झरोखों से		स्मृति चित्र	32

जालियाँवाला बाग हत्याकांड

जालियाँवाला बाग हत्याकांड भारत के पंजाब प्रान्त के अमृतसर में स्वर्ण मन्दिर के निकट जलियाँवाला बाग में १३ अप्रैल १९१९ (बैसाखी के दिन) हुआ था। रौलेट एक्ट का विरोध करने के लिए एक सभा हो रही थी जिसमें जनरल डायर नामक एक अँग्रेज ऑफिसर ने अकारण उस सभा में उपस्थित भीड़ पर गोलियाँ चलवा दीं जिसमें १००० से अधिक व्यक्ति मरे और २००० से अधिक घायल हुए।

अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर कार्यालय में 484 शहीदों की सूची है, जबकि जलियांवाला बाग में कुल 388 शहीदों की सूची है। ब्रिटिश राज के अभिलेख इस घटना में 200 लोगों के घायल होने और 379 लोगों के शहीद होने की बात स्वीकार करते है जिनमें से 337 पुरुष, 41 नाबालिग लड़के और एक 6-सप्ताह का बच्चा था। अनाधिकारिक आँकड़ों के अनुसार 1000 से अधिक लोग मारे गए और 2000 से अधिक घायल हुए।

यदि किसी एक घटना ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर सबसे अधिक प्रभाव डाला था तो वह घटना यह जघन्य हत्याकाण्ड ही था। माना जाता है कि यह घटना ही भारत में ब्रिटिश शासन के अंत की शुरुआत बनी।

१९९७ में महारानी एलिज़ाबेथ ने इस स्मारक पर मृतकों को श्रद्धांजलि दी थी। २०१३ में ब्रिटिश प्रधानमंत्री डेविड कैमरॉन भी इस स्मारक पर आए थे। विजिटर्स बुक में उन्होंनें लिखा कि "ब्रिटिश इतिहास की यह एक शर्मनाक घटना थी।"

घटनाक्रम

13 अप्रैल 1919 को बैसाखी का दिन था। बैसाखी वैसे तो पूरे भारत का एक प्रमुख त्योहार है परंतु विशेषकर पंजाब और हरियाणा के किसान सर्दियों की रबी की फसल काट लेने के बाद नए साल की खुशियाँ मनाते हैं। इसी दिन, 13 अप्रैल 1699 को दसवें और अंतिम गुरु गोविंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की थी। इसीलिए बैसाखी पंजाब और आस-पास के प्रदेशों का सबसे बड़ा त्योहार है और सिख इसे सामूहिक जन्मदिवस के रूप में मनाते हैं। अमृतसर में उस दिन एक मेला सैकड़ों साल से लगता चला आ रहा था जिसमें उस दिन भी हज़ारों लोग दूर-दूर से आए थे।

अंग्रेज़ों की मंशा

प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) में भारतीय नेताओं और जनता ने खुल कर ब्रिटिशों का साथ दिया था। 13 लाख भारतीय सैनिक और सेवक यूरोप, अफ़्रीका और मिडल ईस्ट में ब्रिटिशों की तरफ़ से तैनात किए गए थे जिनमें से 43,000 भारतीय सैनिक युद्ध में शहीद हुए थे। युद्ध समाप्त होने पर भारतीय नेता और जनता ब्रिटिश सरकार से सहयोग और नरमी के रवैये की आशा कर रहे थे परंतु ब्रिटिश सरकार ने मॉण्टेगू-चेम्सफ़ोर्ड सुधार लागू कर दिए जो इस भावना के विपरीत थे।

लेकिन प्रथम विश्व युद्ध के दौरान पंजाब के क्षेत्र में ब्रिटिशों का विरोध कुछ अधिक बढ़ गया था जिसे भारत प्रतिरक्षा विधान (1915) लागू कर के कुचल दिया गया था। उसके बाद १९१८ में एक ब्रिटिश जज सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता में एक सेडीशन समिति नियुक्त की गई थी जिसकी ज़िम्मेदारी ये अध्ययन करना था कि भारत में, विशेषकर पंजाब और बंगाल में ब्रिटिशों का विरोध किन विदेशी शक्तियों की सहायता से हो रहा था। इस समिति के सुझावों के अनुसार भारत प्रतिरक्षा विधान (1915) का विस्तार कर के भारत में रॉलट एक्ट लागू किया गया था, जो आजादी के लिए चल रहे आंदोलन पर रोक लगाने के लिए था, जिसके अंतर्गत ब्रिटिश सरकार को और अधिक अधिकार दिए गए थे जिससे वह प्रेस पर सेंसरशिप लगा सकती थी, नेताओं को बिना मुकदमें के जेल में रख सकती थी, लोगों को बिना वॉरण्ट के गिरफ़्तार कर

सकती थी, उन पर विशेष ट्रिब्यूनलों और बंद कमरों में बिना जवाबदेही दिए हुए मुकदमा चला सकती थी, आदि। इसके विरोध में पूरा भारत उठ खड़ा हुआ और देश भर में लोग गिरफ्तारियां दे रहे थे।

गाँधी जी

गांधी तब तक दक्षिण अफ़्रीका से भारत आ चुके थे और धीरे-धीरे उनकी लोकप्रियता बढ़ रही थी। उन्होंने रोलेट एक्ट का विरोध करने का आह्वान किया जिसे कुचलने के लिए ब्रिटिश सरकार ने और अधिक नेताओं और जनता को रोलेट एक्ट के अंतर्गत गिरफ़्तार कर लिया और कड़ी सजाएँ दीं। इससे जनता का आक्रोश बढ़ा और लोगों ने रेल और डाक-तार-संचार सेवाओं को बाधित किया। आंदोलन अप्रैल के पहले सप्ताह में अपने चरम पर पहुँच रहा था। लाहौर और अमृतसर की सड़कें लोगों से भरी रहती थीं। करीब 5,000 लोग जलियांवाला बाग में इकट्ठे थे। ब्रिटिश सरकार के कई अधिकारियों को यह 1857 के गदर की पुनरावृत्ति जैसी परिस्थिति लग रही थी जिसे न होने देने के लिए और कुचलने के लिए वो कुछ भी करने के लिए तैयार थे।

अंग्रेज़ों के अत्याचार

आंदोलन के दो नेताओं सत्यपाल और सैफ़ुद्दीन किचलू को गिरफ्तार कर कालापानी की सजा दे दी गई। 10 अप्रैल 1919 को अमृतसर के उप कमिश्नर के घर पर इन दोनों नेताओं को रिहा करने की माँग पेश की गई। परंतु ब्रिटिशों ने शांतिप्रिय और सभ्य तरीके से विरोध प्रकट कर रही जनता पर गोलियाँ चलवा दीं जिससे तनाव बहुत बढ़ गया और उस दिन कई बैंकों, सरकारी भवनों, टाउन हॉल, रेलवे स्टेशन में आगज़नी की गई। इस प्रकार हुई हिंसा में 5 यूरोपीय नागरिकों की हत्या हुई। इसके विरोध में ब्रिटिश सिपाही भारतीय जनता पर जहाँ-तहाँ गोलियाँ चलाते रहे जिसमें 8 से 20 भारतीयों की मृत्यु हुई। अगले दो दिनों में अमृतसर तो शाँत रहा पर हिंसा पंजाब के कई क्षेत्रों में फैल गई और 3 अन्य यूरोपीय नागरिकों की हत्या हुई। इसे कुचलने के लिए ब्रिटिशों ने पंजाब के अधिकतर भाग पर मार्शल लॉ लागू कर दिया।

काण्ड का विवरण

बैसाखी के दिन 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में एक सभा रखी गई, जिसमें कुछ नेता भाषण देने वाले थे। शहर में कर्फ्यू लगा हुआ था, फिर भी इसमें सैंकड़ों लोग ऐसे भी थे, जो बैसाखी के मौके पर परिवार के साथ मेला देखने और शहर घूमने आए थे

और सभा की खबर सुन कर वहां जा पहुंचे थे। जब नेता बाग में पड़ी रोड़ियों के ढेर पर खड़े हो कर भाषण दे रहे थे, तभी ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर 90 ब्रिटिश सैनिकों को लेकर वहां

पहुँच गया। उन सब के हाथों में भरी हुई राइफलें थीं। नेताओं ने सैनिकों को देखा, तो उन्होंने वहां मौजूद लोगों से शांत बैठे रहने के लिए कहा।

गोलीबारी

सैनिकों ने बाग को घेर कर बिना कोई चेतावनी दिए निहत्थे लोगों पर गोलियाँ चलानी शुरु कर दीं। १० मिनट में कुल 1650 राउंड गोलियां चलाई गईं। जलियांवाला बाग उस समय मकानों के पीछे पड़ा एक खाली मैदान था। वहाँ तक जाने या बाहर निकलने के लिए केवल एक संकरा रास्ता था और चारों ओर मकान थे। भागने का कोई रास्ता नहीं था। कुछ लोग जान बचाने के लिए मैदान में मौजूद एकमात्र कुएं में कूद गए, पर देखते ही देखते वह कुआं भी लाशों से पट गया। जलियांवाला बाग कभी जलली नामक आदमी की समपतती थी।

हताहत

बाग में लगी पट्टिका पर लिखा है कि १२० शव तो सिर्फ कुए से ही मिले। शहर में कर्फ्यू लगा था जिससे घायलों को इलाज के लिए भी कहीं ले जाया नहीं जा सका। लोगों ने तड़प-तड़प कर वहीं दम तोड़ दिया। अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर कार्यालय में 484 शहीदों की सूची है, जबकि जलियांवाला बाग में कुल 388 शहीदों की सूची है। ब्रिटिश राज के अभिलेख इस घटना में 200 लोगों के घायल होने और 379 लोगों के शहीद होने की बात स्वीकार करते है जिनमें से 337 पुरुष, 41 नाबालिग लड़के और एक 6-सप्ताह का बच्चा था। अनाधिकारिक आँकड़ों के अनुसार 1000 से अधिक लोग मारे गए और 2000 से अधिक घायल हुए। आधिकारिक रूप से मरने वालों की संख्या ३७९ बताई गई जबकि पंडित मदन मोहन मालवीय के अनुसार कम से कम १३०० लोग मारे गए। स्वामी श्रद्धानंद के अनुसार मरने वालों की संख्या १५०० से अधिक थी जबकि अमृतसर के तत्कालीन सिविल सर्जन डॉक्टर स्मिथ के अनुसार मरने वालों की संख्या १८०० से अधिक थी।

करतूत बयानी

मुख्यालय वापस पहुँच कर ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर ने अपने वरिष्ठ अधिकारियों को टेलीग्राम किया कि उस पर भारतीयों की एक फ़ौज ने हमला किया था जिससे बचने के लिए उसको गोलियाँ चलानी पड़ी। ब्रिटिश लेफ़्टिनेण्ट गवर्नर मायकल ओ डायर ने इसके उत्तर में ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर को टेलीग्राम किया कि तुमने सही कदम उठाया। मैं तुम्हारे निर्णय को अनुमोदित करता हूँ। फिर ब्रिटिश लेफ़्टिनेण्ट गवर्नर मायकल ओ डायर ने अमृतसर और अन्य क्षेत्रों में मार्शल लॉ लगाने की माँग की जिसे वायसरॉय लॉर्ड चेम्सफ़ोर्ड नें स्वीकृत कर दिया।

जाँच

इस हत्याकाण्ड की विश्वव्यापी निंदा हुई जिसके दबाव में भारत के लिए सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट एडविन मॉण्टेगू ने 1919 के अंत में इसकी जाँच के लिए हंटर कमीशन नियुक्त किया। कमीशन के सामने ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर ने स्वीकार किया कि वह गोली चला कर लोगों को मार देने का निर्णय पहले से ही ले कर वहाँ गया था और वह उन लोगों पर चलाने के लिए दो तोपें भी ले गया था जो कि उस संकरे रास्ते से नहीं जा पाई थीं। हंटर कमीशन की रिपोर्ट आने पर 1920 में ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर को पदावनत कर के कर्नल बना दिया गया और अक्रिय सूचि में रख दिया गया। उसे भारत में पोस्ट न देने का निर्णय लिया गया और उसे स्वास्थ्य कारणों से ब्रिटेन वापस भेज दिया गया। हाउस ऑफ़ कॉमन्स ने उसका निंदा प्रस्ताव पारित किया परंतु हाउस ऑफ़ लॉर्ड ने इस हत्याकाण्ड की प्रशंसा करते हुये उसका प्रशस्ति प्रस्ताव पारित किया। विश्वव्यापी निंदा के दबाव में बाद को ब्रिटिश सरकार ने उसका निंदा प्रस्ताव पारित किया और 1920 में ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर को इस्तीफ़ा देना पड़ा। 1927 में प्राकृतिक कारणों से उसकी मृत्यु हुई।(उधमसिंह नगर पहले नैनीताल जिले में था। लेकिन अक्टूबर 1995 में इसे अलग जिला बना दिया गया। इस जिले का नाम स्वर्गीय उधम सिंह के नाम पर रखा गया है। उधम सिंह स्वतंत्रता सेनानी थे। जलियांवाला बाग हत्याकांड होने के पश्चात् इन्होंने ही जनरल डायर की हत्या की थी।)

विरोध

गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने इस हत्याकाण्ड के विरोध-स्वरूप अपनी नाइटहुड को वापस कर दिया। आजादी के लिए लोगों का हौसला ऐसी भयावह घटना के बाद भी पस्त नहीं हुआ। बल्कि सच तो यह है कि इस घटना के बाद आजादी हासिल करने की चाहत लोगों में और जोर से उफान मारने लगी। हालांकि उन दिनों संचार और आपसी संवाद के वर्तमान साधनों की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, फिर भी यह खबर पूरे देश में आग की तरह फैल गई। आजादी की चाह न केवल पंजाब, बल्कि पूरे देश के बच्चे-बच्चे के सिर चढ़ कर बोलने लगी। उस दौर के हजारों भारतीयों ने जलियांवाला बाग की मिट्टी को माथे से लगाकर देश को आजाद कराने का दृढ़ संकल्प लिया। पंजाब तब तक मुख्य भारत से कुछ अलग चला करता था परंतु इस घटना से पंजाब पूरी तरह से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सम्मिलित हो गया। इसके फलस्वरूप गांधी ने 1920 में असहयोग आंदोलन प्रारंभ किया।

कुआं

ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर

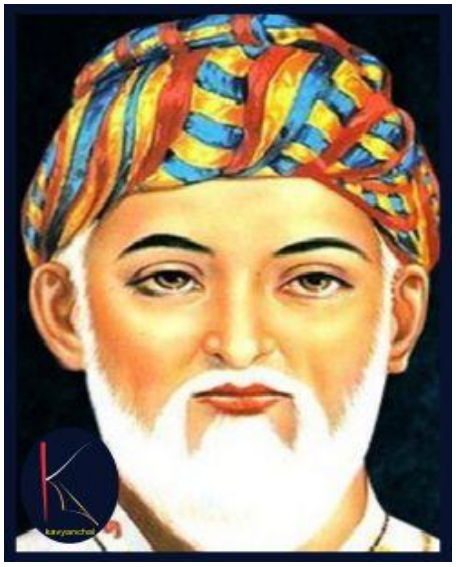

रसखान

रसखान के जन्म समय , शिक्षा -दिक्षा , कार्य - व्यवसाय , निधन - काल अदि के सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक साक्ष्य अभी तक उपलब्ध नहीं है। 1528 से 1555 के बिच में जो गदर हुआ था यदि उस समय रसखन की आयु यदि बीस - बाईस वर्ष मान ली जाए तो उनका जन्म 1533 इ.के आस पास स्वीकार किया जा सकता है। कुछ समय पहले तक यह माना जाता रहा कि 'रसखान' पिहनि के सैइयद् इब्राहिम् का ही उपनाम है, किन्तु परवर्ती अनुशंधानों के आधार् पर यह धारणा मिथ्या सिद्ध हो चुकी है। 'प्रेमवाटिका 'में स्वयं कवि द्वारा दिल्ली छोड़ कर गोवर्धन धाम जाने क उल्लेख से उनका जन्म स्थान एवं प्रारंभिक निवास दिल्ली अथवा उसके आस पास ही मानना उपयुक्त है।

प्रसिद्ध है कि रसखान ने गोस्वामी विट्ठलनाथ जी से वल्लभ सम्प्रदाय के अंतर्गत दिक्षा ली थी । उनके काव्य में अन्न्य वल्लभानुयायि कृष्ण भक्त कविओं जैसी प्रेम-माधुरि एवं भक्ति शैली से इस बात की पुष्टि होती है। दो सो बावन वैष्णव की वार्ता में भी उन्हें वल्लभसम्प्रदायानुयायी बताया गया है। रसखान काव्य के प्राय: सभी समीक्षाक इस बात पर सहमत हे कि 'प्रेमवटिका '(1614) उनकी अन्तिम काव्यकृति हे। सम्भवत: इसकी रचना के कुछ ही वर्ष पश्चात 1618 ई. के लगभग उनका देहावसान हो गया होगा।

रसखान - काव्य का सम्पूर्ण कृतित्व अभी तक प्राप्त नहीं है। 'प्रेमवाटिका ' और 'दानलीला ' नामक विशिष्ट कृतियों के अतिरिक्त उनकी सम्पूर्ण वाणी मुक्तक सवैइयो में आबद्ध है। वर्तमान समय में सर्वाधिक प्रचलित संकलन सुजान रसखान है। ' कल्याण ' के संतावनवें अंक (1955) में रसखान की एक अन्य लघु कृति 'अष्टयाम' प्रकाशित हुई है। इस प्रकार रसखान की प्रमुखत: चार रचनाएं प्रामाणिक मानी जा सकती हैं - सुजान रसखान , प्रेमवाटिका, दानलीला , अष्टयाम्। सुजान रसखान स्फुट छन्दों का संग्रह है , जिसमें 18 सवैये , 17 कवित्त,12 दोहे तथा 4 सोरठें है। इन छन्दो का प्रतिपाद्य भक्ति, प्रेम, राधा - कृष्ण की रूप माधुरि वंशी, मोहिनी एवं कृष्ण लीला सम्बन्धी अन्य सरस प्रसंग है। 'प्रेमवटिका ' के अंतर्गत कवि ने राधा कृष्ण को प्रेमोद्यान के मलिन-मालि मान कर प्रेम के गूढ़ तत्व का सूक्ष्म निरुपण किया है। यह 53 दोहों की लघु क्रुति है। 'दानलीला ' केवल 11 छन्दो का छोटा सा पद्यप्रबन्ध है। जिसमे कवि ने प्रसिद्ध पौराणिक प्रसंग को राधा कृष्ण सम्वाद के रूप में चित्रित किया है। अष्टयाम में संकलित कई दोहो के अंतर्गत श्री कृष्ण के प्रातः जागरण से रत्रिशयन - पर्यन्त उनकी दिनचर्या एवं विभिन्न क्रीड़ा का वर्णन है।

रसखान की गणना भक्त कविओं में की जाती है। वस्तुतः वे भक्त और कवि से भी पहले एक सहृदय भावुक व्यक्ति है। उनका अंतर प्रेमताप की उश्नता से विगलित् हो कर मानो विविध भाव सरणियों के रूप में उमड़ पड़ा है। उनकी इस एकान्तिक प्रेममयि उमंग ने उनके काव्य को सचमुच 'रस की खान' बना दिया है। बादशाह के वंश जन्में मुसलमान रसखान ने स्वयं को राज्यलिप्साजन्य द्वंद्व से मुक्त कर जिस श्रद्धा, प्रेम और भक्तिमय रससागर में निम्मजित किया, उसी में उनके वास्तविक काव्य व्यक्तित्व का मधुर रूप ढला। काव्य रचना उनका साध्य नहीं था और न ही उनकी वाणी का विलास यश-धन-प्रप्ति के निमित्त था। उन्होंने तो अनंत अलोकिक रस के आगार श्री कृष्ण के लीलागान के रसस्वादन में ही स्वयं को कृत कृत्य समझा । प्रेमतत्व के निरुपण में रसखान को अद्भुत् सफलता प्राप्त हुई है। उनका प्रेम वर्णन बड़ा सूक्ष्म, व्यापक एवं विशद है। उनके काव्य का प्रमुख रस श्रृंगार है, जिसके आलम्बन है -- श्री कृष्ण। उनके रूप पर मुग्ध राधा एवं गोपिकाओ की मन:स्थिति के चित्रण के माध्यम से रसखान ने श्रुंगार की मधुर अभिव्यंजना की है। श्रृंगार के उपरान्त रसखान-काव्य में चित्रित दूसरा प्रमुख रस वात्सल्य है। श्री कृष्ण के बाल -रूप की माधुरी का वर्णन उन्होंने यद्यपि गिने चुने छन्दों में ही किया है, पर उनकी काव्यात्मक गरिमा सूर और तुलसी के बाल वर्णन की समता करने में भली भांति सक्षम है ।

रसखान की काव्य भाषा शुद्ध, परिमार्जित् एवं साहित्यिक ब्रज है। माधुर्य एवं प्रसाद गुण के सहज समावेश ने उनकी काव्य भाषा को अधिक सरस और सजीव बना दिया है। विभिन्न लाक्षणिक प्रयोगों के कारण इसमे जो चुटीलापन आ गया है, उससे इसकी अर्थवत्ता और बढ़ गयी है। शब्द-चमत्कार से मुक्त रह कर रसखान ने सिद्ध कर दिया है कि सरल और स्वभाविक भाषा में रचित काव्य सहृदयों के हृदय को अधिक आनंद प्रदान कर सकता है। अलंकार - मोह का उनके काव्य में सर्वथा अभाव है। वे प्रेम और श्रृंगार के कवि हैं , अत: उन्होंने अपने विषय के अनुरुप सवैया , कवित्त एवं दोहा छंद को काव्य रचना के माध्यम के रूप में चुना है। अपने युग में सम्पूर्ण कृष्ण भक्ति-काव्य के गेय पदों में रची जाने की परम्परा होते हुए भी रसखान द्वारा कवित्त और सवैया छंद को अपनाना उनकी स्वच्छन्द वृत्ति का सूचक है। वे किसी परम्परा के बंदन में नहीं बंधे हैं। उनकी भक्ति किसी साम्प्रदायिक सिद्धांत में आबद्ध नहीं है । उनका प्रेम निरुपण सुफियों की प्रेम पद्धति का अनुकरण न हो कर स्वछन्द हैं। उनकी भक्ति हृदय की मुक्त साधना है और उनका श्रृंगार वर्णन भावुक हृदय की उन्मुक्त अभिव्यक्ति है । इसलिए उन्हें स्वछन्द काव्यधारा का प्रवर्तक कहा जाता है।

शुभश्री शताब्दि दास, +3 प्रथम वर्ष

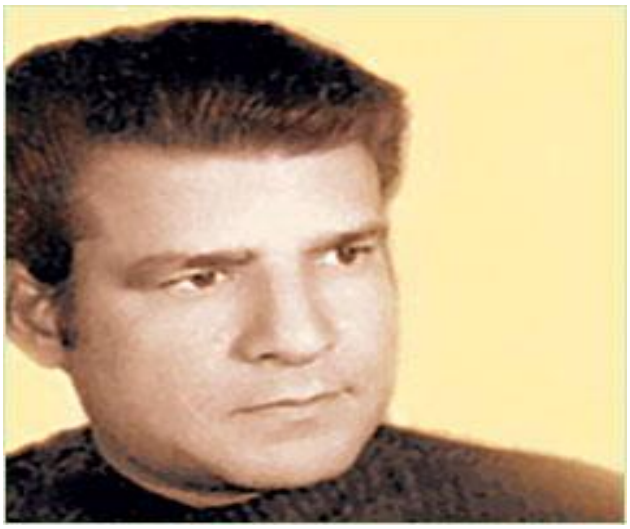

दुष्यंत कुमार त्यागी

दुष्यंत कुमार त्यागी (१९३३-१९७५) एक हिन्दी कवि और ग़ज़लकार थे।

दुष्यंत कुमार का जन्म उत्तर प्रदेश में बिजनौर जनपद की तहसील नजीबाबाद के ग्राम राजपुर नवादा में हुआ था। जिस समय दुष्यंत कुमार ने साहित्य की दुनिया में अपने कदम रखे उस समय भोपाल के दो प्रगतिशील शायरों ताज भोपाली तथा क़ैफ़ भोपाली का ग़ज़लों की दुनिया पर राज था। हिन्दी में भी उस समय अज्ञेय तथा गजानन माधव मुक्तिबोध की कठिन कविताओं का बोलबाला था। उस समय आम आदमी के लिए नागार्जुन तथा धूमिल जैसे कुछ कवि ही बच गए थे। इस समय सिर्फ़ ४२ वर्ष के जीवन में दुष्यंत कुमार ने अपार ख्याति अर्जित की।

निदा फ़ाज़ली उनके बारे में लिखते हैं

"दुष्यंत की नज़र उनके युग की नई पीढ़ी के ग़ुस्से और नाराज़गी से सजी बनी है। यह ग़ुस्सा और नाराज़गी उस अन्याय और राजनीति के कुकर्मो के ख़िलाफ़ नए तेवरों की आवाज़ थी, जो समाज में मध्यवर्गीय झूठेपन की जगह पिछड़े वर्ग की मेहनत और दया की नुमानंदगी करती है। "

कृतियाँ

प्रमुख कविताएँ

'कहाँ तो तय था', 'कैसे मंजर', 'खंडहर बचे हुए हैं', 'जो शहतीर है', 'ज़िंदगानी का कोई', 'मकसद', 'मुक्तक', 'आज सड़कों पर लिखे हैं', 'मत कहो, आकाश में', 'धूप के पाँव', 'गुच्छे भर', 'अमलतास', 'सूर्य का स्वागत', 'आवाजों के घेरे', 'जलते हुए वन का वसन्त', 'आज सड़कों पर', 'आग जलती रहे', 'एक आशीर्वाद', 'आग जलनी चाहिए', 'मापदण्ड बदलो', 'कहीं पे धूप की चादर', 'बाढ़ की संभावनाएँ', 'इस नदी की धार में', 'हो गई है पीर पर्वत-सी'।

काव्य नाटिका

एक कण्ठ विषपायी

नाट्य

और मसीहा मर गया

गजल

साये में धूप

उपन्यास

छोटे-छोटे सवाल

आँगन में एक वृक्ष

दुहरी जिंदगी

दुष्यंत कुमार त्यागी

गज़ल

ये जो शहतीर है पलकों पे उठा लो यारो
अब कोई ऐसा तरीक़ा भी निकालो यारो

दर्द-ए-दिल वक़्त को पैग़ाम भी पहुँचाएगा
इस कबूतर को ज़रा प्यार से पालो यारो

लोग हाथों में लिए बैठे हैं अपने पिंजरे
आज सय्याद को महफ़िल में बुला लो यारो

आज सीवन को उधेड़ो तो ज़रा देखेंगे
आज संदूक़ से वो ख़त तो निकालो यारो

रहनुमाओं की अदाओं पे फ़िदा है दुनिया
इस बहकती हुई दुनिया को सँभालो यारो

कैसे आकाश में सूराख़ नहीं हो सकता
एक पत्थर तो तबीअ'त से उछालो यारो

लोग कहते थे कि ये बात नहीं कहने की
तुम ने कह दी है तो कहने की सज़ा लो यारो

अब तो पथ यही है

जिंदगी ने कर लिया स्वीकार,
अब तो पथ यही है|
अब उभरते ज्वार का आवेग मद्धिम हो चला है,
एक हलका सा धुंधलका था कहीं, कम हो चला है,
यह शिला पिघले न पिघले, रास्ता नम हो चला है,
क्यों करूँ आकाश की मनुहार ,
अब तो पथ यही है |

क्या भरोसा, काँच का घट है, किसी दिन फूट जाए,
एक मामूली कहानी है, अधूरी छूट जाए,
एक समझौता हुआ था रौशनी से, टूट जाए,
आज हर नक्षत्र है अनुदार,
अब तो पथ यही है|

यह लड़ाई, जो की अपने आप से मैंने लड़ी है,
यह घुटन, यह यातना, केवल किताबों में पढ़ी है,
यह पहाड़ी पाँव क्या चढ़ते, इरादों ने चढ़ी है,
कल दरीचे ही बनेंगे द्वार,
अब तो पथ यही है |

हिन्दी कृष्ण - काव्यधारा की प्रमुख प्रवृतियाँ

1.लीलाओं का गान

कृष्ण-भक्ति-साहित्य की पूर्णता केवल कृष्ण के बाल और किशोर जीवन तक ही सीमित है। कृष्ण-काव्य का प्रमुख विषय लीलाओं का गान है। इन लीलाओं में कवियों का ध्यान मुख्यतः कृष्ण के बाल एवं किशोर जीवन की ओर ही गया है। वस्तुतः कृष्ण-भक्ति-शाखा में वात्सल्य सख्य एवं माधुर्य भाव की भक्ति का प्राधान्य है। अतः इनके अनुरूप ही कृष्ण चरित्र का वर्णन कृष्ण काव्य में मिलता है। वात्सल्य भाव के अंतर्गत कृष्ण की बाल लीलाओं, चेष्टाओं एवं यशोदा माँ के हृदय की झाँकी मिलती है। सख्य भाव के अंतर्गत कृष्ण और ग्वालों के जीवन की मनोरंजन घटनाएं मिलती है, और माधुर्य भाव के अंतर्गत गोपी - लीला प्रमुख है। गोपी -लीला के दोनों रूपों अर्थात रास एवं वियोग की सुंदर व्यंजना कृष्ण-काव्य के सौंदर्य को बढ़ा देती है। इसी माधुर्य भाव के अंतर्गत भ्रमरगीत की रचना का विशेष महत्व है।

2. गीत - काव्य एवं संगीतात्मकता

कृष्ण-काव्य की दूसरी विशेषता इसकी संगीतात्मकता है। इसमें गीत-काव्य का सुंदर विकास हुआ है। इसलिए कृष्ण-काव्य में राग-रागिनियों का सुंदर संयोजन है। सूरदास, मीरा, हितहरिवंश, हरिदास, इत्यादि के पदों में संगीत की अपूर्व छटा है और आज भी संगीत-क्षेत्र में इन पदों का महत्व स्पष्ट है। वस्तुतः कृष्ण चरित्र ही कुछ ऐसा 'लिरिकल' है कि उसमें आप-से-आप

संगीतात्मकता आ जाती है। डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने राधा को 'लिरिकल' (विशुद्ध गीतकाव्यत्मक) पात्र कहा है।

3. मुक्तक शैली

कृष्ण काव्य की तीसरी प्रमुख विशेषता है मुक्तक शैली, जिसमे छंद , रस, सवैया इत्यादि हैं। इस काव्य की गीत-काव्य की बड़ी मनोहारिणी छटा है। संगीतात्मकता के कारण कृष्ण-काव्य इत्यादि है। इस काव्य में गीत-काव्य के पदों का सृजन विभिन्न राग-रागिनियों पर मिलता है। कृष्ण काव्य में मुक्तक शैली अत्यंत लोकप्रिय हुई है।

यहां यह भी स्मरण करना उपयुक्त होगा कि कृष्ण-काव्य का सृजन प्रबंध शैली में भी हुआ है। कृष्ण काव्य में कुछ प्रबंध काव्य भी मिलते हैं, जिनकी रचना शुद्ध ब्रज भाषा में हुई है।

4. ब्रज भाषा या पुरुषोत्तम भाषा

कृष्ण काव्य की चौथी विशेषता, इनकी भाषा की है। इनकी भाषा प्रायः साहित्यिक ब्रज भाषा ही है। श्रीकृष्ण - लीला के जिन अंशो (बाल एवं किशोर जीवन) को कृष्ण भक्त कवियों ने अपने काव्य में चित्रित किया, उनके लिए ब्रज भाषा जैसी मधुर और सरल भाषा की आवश्यकता थी। इसलिए ब्रजभाषा कृष्ण चरित्र के लिए पूर्णतया उपयुक्त सिद्ध हुयी। इस भाषा का प्रयोग स्वयं भगवान श्रीकृष्ण करते थे अतः इसे पुरुषोत्तम भाषा भी कहते हैं।

5. श्रीकृष्ण की माधुर्य भक्ति का उत्कर्ष

कृष्ण-काव्य की पाँचवी विशेषता, उनके उत्कृष्ट प्रेम का वर्णन है। आचार्य डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सूरदास के प्रेम के स्वच्छ एवं मार्जित रूप का वर्णन बड़े मार्मिक शब्दों में किया है। सूर के वियोग वर्णन की चर्चा करते हुए वे कहते हैं- मिलन के समय की मुखरा, लीलावती, चंचल और हँसोड़ राधिका वियोग के समय मौन, शांत और गंभीर हो जाती है। उद्धव के साथ अन्यान्य गोपियों काफी बकझक करती है, पर राधिका वहाँ जाती भी नहीं। उद्धव ने श्रीकृष्ण से उनकी जिस मूर्ति का वर्णन किया है उससे पत्थर भी पिघल सकता है। उन्होंने राधिका की आँखों को निरंतर बहते हुए देखा था।

6. कृष्ण काव्य के प्रमुख भाव

कृष्ण-काव्य में मुख्यतया चार भाव मिलते हैं- रति-भाव, भक्ति-भाव, वात्सल्य-भाव एवं निर्वेद। निर्वेदजन्य भाव की अभिव्यक्ति आत्मग्लानि एवं दैन्य की अभिव्यक्ति करने वाले पदों में हुई है। वात्सल्य रस के अधिष्ठाता महाकवि सूरदास हैं। भक्ति-भावना के उज्ज्वल स्वरूप अर्थात चिन्मुख प्रेम को भक्तों ने उज्ज्वल रस कहा है। यह उज्ज्वल रस कृष्ण-काव्य में अपने उत्कृष्ट रूप में मिलता है। कृष्ण काव्य के परवर्ती साहित्य में शुद्ध रति-भाव की प्रधानता थी मिलती है।

स्तुति प्रज्ञा दास, +3 प्रथम वर्ष

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा ना कोई
मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा ना कोई
जाको सर मोर मुकट मेरा पति वोही
मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा ना कोई

कोई कहें करो कोई कहें गोरों
कोई कहें करो कोई कहें गोरों
मेरो अंखियां खोल
कोई कहें हलकों कोई कहें बहारों
कोई कहें हलकों कोई कहें बहारों
हियो है तराजू
मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा ना कोई
मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा ना कोई

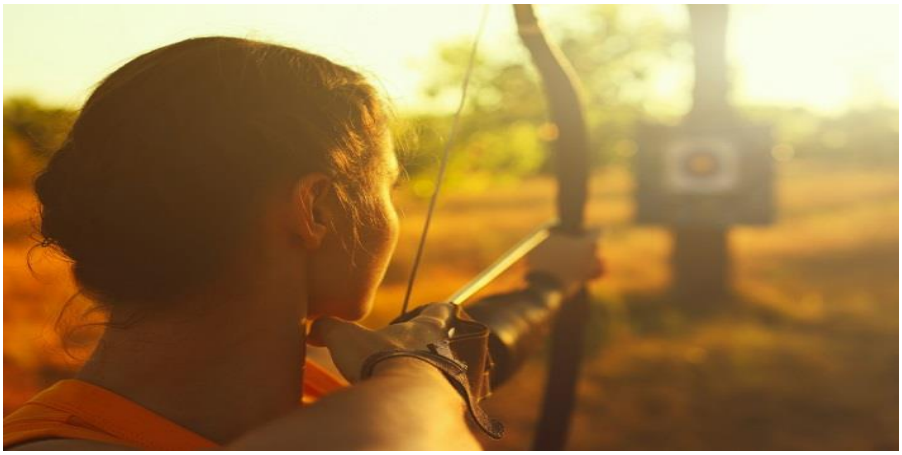

मेरा लक्ष्य

जलता रहे तू मुझसे हजार बार

पर न कर सकेगा मुझे मेरे लक्ष्य से दूर ।

तू लाख बिछा मेरे रास्ते पे कांटे

पर न कर सकेगा मेरे हौसलों को कमजोर।

गिरती पड़ती संभल गई मैं

कुछ हकीकत से समना कर गई मैं।

मैं न कभी तेरी दोस्त थी, न थी कभी तेरी दुश्मन

तेरे मेरे बीच का फासला अब जैसे ज़मीन ओर आसमान।

जिसे दोस्त समझती थी, वो न रहा अब अपना

तुझसे भी अब आगे जाऊ बस है मेरा ये सपना।

पिंकी सिंह, +3 द्वितीय वर्ष

मृत्यु नहीं है जीवन का अंत

मृत्यु का अर्थ है भौतिक शरीर से आत्मा का अलग होना। मृत्यु नये और बेहतर जीवन का एक प्रारंभिक बिन्दु बन जाता है। यह जीवन के उच्च रूप का द्वार खोलता है। यह संपूर्ण जीवन का केवल एक प्रवेश द्वार है। जन्म और मृत्यु माया के मायाजाल हैं। जन्म लेते ही मरने की शुरुआत हो जाती है और मरते ही जीवन की शुरुआत हो जाती है। जन्म और मृत्यु इस संसार के मंच पर प्रवेश करने और बाहर जाने का द्वार मात्र है। वास्तव में ना तो कोई आता है और ना ही कोई जाता है। केवल ब्रह्म और अनंत का ही अस्तित्व होता है। जैसे आप घर से दूसरे घर में जाते हैं, वैसे ही आत्मा अनुभव प्राप्त करने के लिए एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करती है। जैसे मनुष्य पुराने कपड़े छोड़कर नए कपड़े पहनता है, बिलकुल वैसे ही आत्मा पुराने शरीर को छोड़कर नया शरीर धारण करती है। मृत्यु जीवन का अंत नहीं है। जीवन एक कभी न खत्म होने वाली प्रक्रिया है। यह निरंतर चलती ही रहती है। मृत्यु एक जरूरी घटना है जिसका अनुभव हर आत्मा को भविष्य में विकास करने के लिए करना है। एक विवेकी और बुद्धिमान व्यक्ति कभी भी मौत से नहीं डरता है। हर आत्मा एक चक्र है। इस चक्र की परिधि कहीं भी खत्म नहीं होती लेकिन इसका केन्द्र हमारा शरीर है। तो फिर, मौत से क्यों डरना चाहिए? परमात्मा या सर्वोच्च आत्मा मृत्युरहित, कालातीत, निराधार और असीम है। यह शरीर, मन और पूरे संसार के लिए एक केन्द्र है। मृत्यु केवल भौतिक शरीर को प्राप्त होती है, जो पांच तत्वों से बना है। मृत्यु शाश्वत आत्मा को कैसे मार सकती है जो समय, स्थान और कर्म से परे

है? अगर आप जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति पाना चाहते हैं तो आपको शरीर विहीन होना होगा।

शरीर हमारे कर्मों का परिणाम है। आपको कोई भी कार्य फल की उम्मीद किए बिना ही करना चाहिए। अगर आप खुद को रागद्वेष या पसंद और नापसंद से मुक्त कर लेते हैं, तो आप खुद को कर्म से भी मुक्त कर लेंगे। आप केवल अहंकार को ही खत्म कर खुद को 'राग' और 'द्वेष' से मुक्त कर सकते हैं। जब अविनाशी ज्ञान के द्वारा अज्ञानता का अंत हो सकता है तो आप अहंकार का भी विनाश कर सकते हैं। इसलिये इस शरीर के जड़ का कारण यह अज्ञानता है। जिसने भी उस अमर आत्मा का एहसास कर लिया जो सभी ध्वनि, दृश्य, स्वाद और स्पर्श से परे है, जो नीराकार और निर्गुण है, जो प्रकृति से परे है, जो तीन शरीर और पांच तत्वों से परे है, जो अनंत और अपरिवर्तनीय है, उसने खुद को मौत के मुंह से आजाद कर लिया। जीव या व्यक्तिगत आत्मा अपने कार्यों को प्रदर्शित करने के लिए और अनुभव प्राप्त करने के लिए अनेक शरीर धारण करती है। वो शरीर में प्रवेश करती है और फिर जब वह शरीर जीने लायक नहीं रहता, तो उसे त्याग देती है। वह फिर से एक नए शरीर का निर्माण करती और पुन: वही प्रक्रिया दोहराती है। यह प्रक्रिया स्थानांतरगमन कहलाती है। किसे नये शरीर में आत्मा का प्रवेश करना जन्म कहलाता है। शरीर से आत्मा का अलग हो जाना मृत्यु कहलाता है। अगर शरीर में आत्मा न हो तो वह शरीर मृत शरीर है और इसे प्राकृतिक मृत्यु कहते हैं। एककोशकीय जीवों के लिए प्राकृतिक मृत्यु अज्ञात है। जब पृथ्वी पर ऐसे जीवों को जीवन मिलता है तो उनकी मृत्यु अज्ञात होती है। यह घटना केवल बहुकोशकीय जीवों के साथ ही होती है। प्रयोगशालाओं के शोधों से पता चला है कि किसी के जीवन कि समाप्ति के बाद भी उसके अंग काम कर सकते हैं। मृत्यु के बाद भी कई महीनों तक सफेद रक्तकण शरीर में जीवित रहते हैं। मृत्यु जीवन का अंत नहीं है। यह महज एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व की समाप्ति है। जीवन संसार पर विजय पाने के लिए चलती रहती है। यह तब तक चलती रहती है जबतक यह अनंत में विलीन नहीं हो जाती।

सोनालि राउत, +3 द्वितीय वर्ष

डॉ बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर

डॉ आंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्यप्रदेश के इंदौर जिल्ले में महू नाम के गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम राम जी सतपाल था। जो भारतीय सेना में रहते हुए देश की सेवा करते रहे और अपने अच्छे कार्य की बदौलत सेना में सूबेदार के पद तक पहुँचे थे। उसकी माँ का नाम भीमाबाई था। राम जी सुरू से ही अपने बच्चों को पढ़ाई लिखाई और कड़ी मेहनत के लिए प्रोत्साहित करते थे। जिसकी वजह से अम्बेडकर की पढ़ाई लिखाई का शौक बचपन से ही था। लेकिन वे एक महान जात से ताल्लुक रखते थे। जिससे उस समय लोग अछूत भी कहते थे। अछूत का मतलब यह था कि अगर इस नीची जात के लोगों द्वारा ऊँची जात की किसी भी वस्तु को छू दिया जाता था तो उसे अपवित्र मान लिया जाता था और ऊंची जात के लोग उन चीजों को उपयोग में लाना पसंद नहीं करते थे। यहां तक की नीची जात के बच्चे समाज की इस बेहद ही खराब सोच की वजह से पढ़ाई लिखाई के लिए स्कूल भी नहीं जा सकते थे।लेकिन सौभाग्य से सरकार ने सेना में काम कर रहे सभी कर्मचारियों के बच्चों के लिए एक विशेष स्कूल चलाई और इसकी वजह से अम्बेडकर की शुरुवात की पढ़ाई सम्भव हो सकी। स्कूल की पढ़ाई लिखाई में अच्छे होने के बावजूद अम्बेडकर और उनके साथ के सभी नीची जात के बच्चों को क्लास के बाहर या फ़िर क्लास की कोने में अलग बिठाया जाता था। वहां के शिक्षक उन पर थोड़ा भी ध्यान नहीं देते थे। सारी हदें तो इस बात से पार हो जाती है कि उन्हें

पानी पीने के लिए नल तक को छूने की इजाजत नहीं थी। स्कूल का चपरासी आकर दुर से उनकी हाथों में पानी डालता था और तब जा कर उन्हें पीने के लिए पानी मिलता था। चपरासी के न होने पर उन्हें बिना पानी के ही प्यासे रहना पड़ता था।

1894 में रामजी सतपाल की रिटायर होने के बाद उनका पूरा परिवार महराष्ट्र के सतारा नाम के एक जगह पर चला गया। लेकिन सतारा आने के केवल दो साल बाद अम्बेडकर की माँ की मृत्यु हो गई। जिसके बाद उनकी बुआ मिरवाई ने कठिन परिस्थितियों में उनकी देख भाल की। राम जी सतपाल ओर भीमबाई के चौथा बच्चों में केवल तीन बेटे बलराम, आनन्द राम, ओर भीम राव ओर तीन बेटियां मंजुला, गंगा ओर तुलसा इस कठिन हालातों में जीवित बच पाए। और अपने भाइयों ओर बहनों में केवल भीमराव आंबेडकर ही समाज का अनदेखा करते हुए पढ़ाई में सफल हुए और फिर आगे की पढ़ाई जारी रख सके। 1897 मैं अम्बेडकर ने बम्बई के एलफिंस्टन हाई स्कूल में एडमिशन लिया और उस स्कूल में छोटी जात के सबसे पहले छात्र बन गए। 1907 मैं अम्बेडकर ने अपने हाई स्कूल की परीक्षा पास की।

जिस सफलता से उनकी जात के लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई। क्योंकि उस समय हाई स्कूल पास होना बहुत बड़ी बात थी और वो भी एक अछूत का पास होना तो आश्चर्य जनक था। इस सफलता के लिए अर्जुन केलूसकर ने अम्बेडकर को अपनी लिखी हुई किताब गौतम बुद्ध की जीवनी पुरस्कार के तौर पर दी। उसके बाद से अम्बेडकर ने पढ़ाई लिखाई के क्षेत्र में सभी रिकार्ड को तोड़ते हुए 1912 में अर्थ शास्त्र और र्रज्नीति विज्ञान में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। 1913 में स्कॉलरशिप प्राप्त करते हुए स्नातकोत्तर की शिक्षा प्रप्त करने के लिए अमेरिका चले गए। वहां कोलम्बिया यूनिवर्सिटी से 1915 में एम. ए की डिग्री ली फिर अगले ही साल 1916 में उनके एक शोध के लिए Ph. D. से सम्मानित किया गया।

इन रिसर्च की उन्होंने एक किताब Evolution Of Provincial Finance In British India के रूप में प्रकाशित किया। अपनी डॉक्टरेट की डिग्री ले कर सन 1916 में अम्बेडकर लन्दन चले गए। जहां उन्होंने London School Of Economics में डॉक्टरेट की तैयारी के लिए अपना नाम लिखवा लिया लेकिन अगले ही साल स्कॉलरशिप के खत्म होने के चलते मजबूरन उन्हें अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ कर भारत वापस लौटना पड़ा। उसके बाद भारत आकर उन्होंने अकाउंटेंट जैसी कई सारी नौकरियां की। फिर 1920 मैं अपने बचाए हुए पैसे ओर दोस्त की मदद से फिर

इंग्लैंड चले गए। जहां 1923 मैं उन्होंने अपना रिसर्च Problem Of The Rupee या हिंदी में कहे तो रुपये की समस्या को पूरा किया। ओर फिर उन्हें लन्दन यूनिवर्सिटी द्वारा Doctor Of Science की उपाधि दी गई।

उसके बाद से उन्होंने अपना पूरा जीवन समाज की सेवा में झोंक दिया। वे भारत की स्वतंत्रता को कई सारे अभियानों में शामिल हुए। दलितों के सामाजिक आज़ादी ओर भारत को एक स्वतंत्र राष्ट्र बनाने के लिए उन्होंने बहुत सारी किताबें भी लिखी। जो पूरे समाज में बहुत ही प्रभावशाली साबित हुई। 1926 में वे बम्बई विधान परिषद के सदस्य बन गए। 13 अक्तूबर 1935 को अम्बेडकर को सरकारी लौ कॉलेज में प्रिंसिपल बनाया गया। इस पद पर उन्होंने दो सालों तक काम किया। 1936 में अम्बेडकर ने स्वतंत्र लेबर पार्टी के स्थापना की जो 1937 मैं केंद्रीय विधान सभा चुनाव लड़ी और 115 सीटे जीती। 1941 ओर 1945 के बीच में उन्होंने बहुत सारी विवादित किताबें प्रकाशित की। जिनमें Thoughts On Pakistan भी शामिल है। इस किताब में मुसलमानों के लिए अलग देश पाकिस्तान बनाने की मांग का उन्होंने जमकर विरोध किया था। अम्बेडकर का भारत को देखते का नजरिया बिलकुल ही अलग था। वे पूरे देश को बिना अलग हुए देखना चाहते थे। इसलिए उन्होंने भारत के टुकड़े करने वाले नेताओं के नीतियों की जमकर आलोचना की।

15 अगस्त 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद अम्बेडकर पहले कानून मंत्री बने ओर बिगड़ती सेहत के वावजूद उन्होंने एक ठोस कानून भारत को दिया। ओर फिर उनका लिखा हुआ संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ। इसके अलावा विचारों से भारतिय रिजर्व बैंक की स्थापना भी हुई। आखिरकार राजनीतिक मुद्दों से जूझते हुए अम्बेडकर का स्वास्थ्य दिन ब दिन खराब होता चला गया। 6 दिसंबर 1956 को उन्होंने इस दुनिया को अलविदा कह दिया। लेकिन इसके पहले उन्होंने समाज को, सोच को काफी हद तक बदल दिया। गरीब, दलितों और महिलाओं को उनका हक दिलाया। हमारे देश के लिए कितना कुछ किया कि उनके एहसानों को हम शब्दों में बयां नहीं कर सकते हैं।

सोनिआ नायक, +3 द्वितीय वर्ष

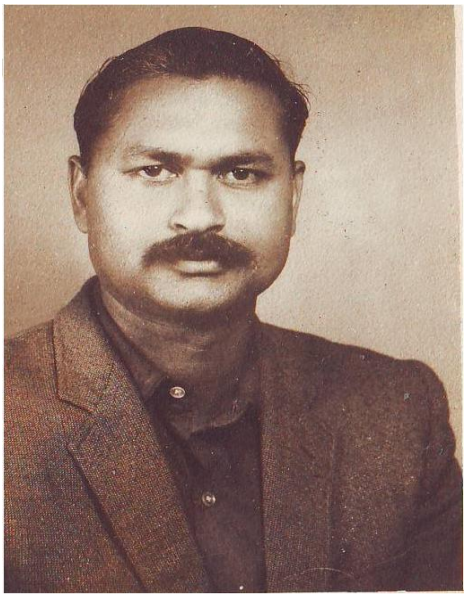

सुदामा पांडेय 'धूमिल'

जीवन परिचय

धूमिल का जन्म वाराणसी के पास खेवली गांव में हुआ था। उनका मूल नाम सुदामा पांडेय था। धूमिल नाम से वे जीवन भर कवितायें लिखते रहे। सन् १९५८ में आई टी आई (वाराणसी) से विद्युत डिप्लोमा लेकर वे वहीं विदयुत अनुदेशक बन गये। ३८ वर्ष की अल्पायु में ही ब्रेन ट्यूमर से उनकी मृत्यु हो गई।

रचनात्मक विशेषताएं

सन १९६० के बाद की हिंदी कविता में जिस मोहभंग की शुरूआत हुई थी, धूमिल उसकी अभिव्यक्ति करने वाले अंत्यत प्रभावशाली कवि है। उनकी कविता में परंपरा, सभ्यता, सुरुचि, शालीनता और भद्रता का विरोध है, क्योंकि इन सबकी आड़ में जो ह्रदय पलता है, उसे धूमिल पहचानते हैं। कवि धूमिल यह भी जानते हैं कि व्यवस्था अपनी रक्षा के लिये इन सबका उपयोग करती है, इसलिये वे इन सबका विरोध करते हैं। इस विरोध के कारण उनकी कविता में एक प्रकार की आक्रामकता मिलती है। किंतु उससे उनकी कविता की प्रभावशीलता बढती है। धूमिल अकविता आन्दोलन के प्रमुख कवियों में से एक हैं। धूमिल अपनी कविता के माध्यम से एक ऐसी काव्य भाषा विकसित करते है जो नई कविता के दौर की काव्य- भाषा की रुमानियत, अतिशय कल्पनाशीलता और जटिल बिंबधर्मिता से मुक्त है। उनकी भाषा काव्य-सत्य को जीवन सत्य के अधिकाधिक निकट लाती है।

रचनाएं

धूमिल के तीन काव्य-संग्रह प्रकाशित हैं-

- संसद से सड़क तक
- कल सुनना मुझे
- सुदामा पांडे का प्रजातंत्र

उन्हें मरणोपरांत १९७९ में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

रोटी और संसद

एक आदमी
रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ़ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ--
'यह तीसरा आदमी कौन है?'
मेरे देश की संसद मौन है।

ग़रीबी

ग़रीबी
एक ख़ुली हुई क़िताब
जो हर समझदार
और मूर्ख के हाथ में दे दी गई है।
कुछ उसे पढ़ते हैं
कुछ उसके चित्र देख
उलट-पुलट रख देते
नीचे 'शो-केस' के।

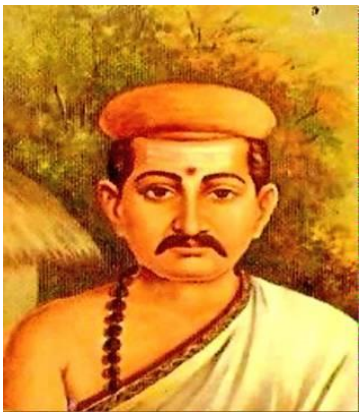

बिहारी

बिहारी रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। इनका जन्म 1595 ई में ग्वालियर में हुआ था। इनके पिता का नाम केशव राय था। इनके पिता निम्बार्क सम्प्रदाय के महंत नरहरि दास के शिष्य थे। बिहारी ने उनके यहाँ संस्कृत-प्राकृत के काव्य ग्रंथों का अध्ययन किया था। बाद में ये बृन्दावन आ गए ओर वही मथुरा के किसी ब्राह्मण परिवार में इनका विवाह हुआ। शाहजहां के कृपापात्र बिहारी का सम्पर्क अन्य राजाओं से भी हुआ ।और उन के राज्य से इनके लिए वृत्ति बंध गई। सन 1645 के आसपास ये जब वृत्ति लेने जयपुर गये, तो इन्हें पता लगा कि वहां के महाराज जयसिंह अपनी नवविवाहित रानी के प्रेम में मुग्ध हो कर महलों में ही पड़े रहते है औऱ राजकाज देखना छोड़ दिया। सामंतगण तथा प्रजा के लोग व्यथित थे। उसी समय बिहारी ने एक दोहा लेख कर महाराज के पास पहुंचाया ।

“नहीं पराग नहीं मधुर मधु, नहीं विकास इहि काल ।

अली कली ही सो बंधयो, आगे कौन हवाल ।।

बिहारी के इस दोहे का बड़ा अद्भुत प्रभाव पड़ा और महाराज जयसिंह तथा चौहान रानी दोनों ही बडे खुश हुए। उन्होंने इन को काली पहाड़ी नामक ग्राम दिया तथा प्रति छन्द पर एक मुहर पुरस्कार में देने का संकल्प लिया। तदुपरांत बिहारी जयपुर में ही रहने लगे। और आमेर दरबार के राज कवि के रुप में अपना जीवन सुख पूर्वक बिताने लगे। चौहान रानी के कुमार रामसिंह का जन्म हुआ। कुमार के पढ़ने के लिए इन्होंने अपने दोहों का संग्रह किया, साथ ही साथ अनेक दोहें भी आवश्यकता अनुसार संकलित किये। इस प्रकार बिहारी का जयपुर के राजपरिवार में विशिष्ट स्थान हो गया। कहते हैं कि निरंजन कृष्ण को इन्होंने गोद लिया। एक कृष्ण कवि बिहारी सतसई के टीकाकार हुए हैं। परम्परा के अनुसार बिहारी सतसई का समाप्ति

काल सन 1662 माना जाता हैं। और ह भी कहा जाता है कि बिहारी का देहावसान सन 1662 में हुआ।

बिहारी की ख्याति का मूल आधार उनका अन्यतम ग्रंथ 'सतसई' है। यह 'गाथासतई', 'आर्यसप्तसैं', 'अमृकशतक' आदि ग्रंथ की प्रेरणा से निर्मित एक विविध रत्नमाला है। जिसकी आभा के सामने आज भी कोई मुक्तक काव्य ठहर नहीं पता है। मुक्तक परंपरा में बिहारी का स्थान शीर्ष पर है। 'सतसई' में बिहारी ने अलंकार ,रस, भाव, नायिका भेद, ध्वनि, वक्रोक्ति, रीति, गण आदि का ध्यान रखकर सुंदर दोहे रचे हैं। यह सतसाई - परंपरा की एक उज्जल कड़ी है। 'सतसाई' के अन्तर्गत आलंकारिक चमत्कार और भाव-सौंदर्य दोनों ही है। इसमें ध्वनिकाव्य के उत्कृष्ट उदहारण हैं। अतः बिहारी की रचना रीतिबद्ध है।

बिहारी अपने संक्षिप्त वर्णन और नपे तुले शब्द में किसी वस्तु, व्यक्ति या भाव का जगमगाता रूप निखार कर प्रस्तुत करते हैं। उनके रुपवर्णन, वय:संधि के चित्रण तथा मादक युवावस्था की मधुर झलकें मन को मुग्ध कर लेती हैं। औऱ ये चित्रण केवल काल्पनिक न होकर जीवन के यथार्थ रूप हैं। बिहारी ने अपनी पैनी दृष्टि से जीवन का निरीक्षण किया था, अतः उन्होंने युवा वृत्ति का सजीव चित्रण किया है। आंतरिक भावना प्रेरित शारीरिक चेष्टाओं तथा विभिन्न कार्य्कलापों का चित्रण बिहारी इस प्रकार करते हैं कि वह मानस-पटल पर सदा के लिए अमिट हो जाता हैं। उन्होनें केवल भवुकता वश सौंदर्य -चित्रण नहीं किया, वरन जीवन के प्रौढ़ अनुभव का भी उद्घाटन किया है। वे अपने भाव और विचारों को कलात्मक रूप में प्रस्तुत करने की विलक्षण प्रतिभा से सम्पन्न थे। बिहारी शृंगार, भक्ति एवं नीति की त्रिवेणी हैं।

ब्रजभाषा पर बिहारी का असाधारण अधिकार था। उनको शब्दों ओर वर्ण के स्वभाव की परख थी। शब्द और वर्ण उनके दोहों में नगीनों के समान जड़े हैं औऱ रत्नों की आभा बिखेरते हैं। उनकी रचना में ब्रजभाषा अपनी प्रौढ़ता औऱ भाव सम्पन्नता में इठलाती हुई दिखती है।वो लय और गति, संगीत और नर्तन की विशेषताओं से युक्त है।

बिहारी विधत कवि होते हुए भी अत्यंत मौलिक हैं। केवल एक ग्रंथ की रचना करके भी कवियों की पंक्ति में बिहारी का उत्कृष्ट स्थान है। कवि के रूप में वे हिंदी साहित्य के गौरव हैं और उनकी ' सतसई' हिंदी काव्य की अपूर्व निधि है।

निहारिका मिश्र, +३ प्रथम वर्ष

अधूरा सच

एक 25 वर्ष का लड़का ट्रेन में सफर करते वक्त खिड़की से बाहर के नजारे को देख रहा था। वह अचानक चिललाया - “पापा, वो देखो पेड़ पीछे जा रहे हैं।“

पिताजी मुसकुराए।

पास में बैठा एक व्यक्ति, लड़के के इस बचकाने व्यवहार को देखकर हैरान था और उसे लड़के पर दया आ रही थी। थोड़ी देर बाद लड़का फिर खुशी से चिल्लाया- “देखो पापा, बादल हमारे साथ चल रहे है।“ अब पास में बैठे व्यक्ति से रहा नहीं गया और उसने कहा- "आप अपने बेटे को किसी अच्छे अस्पताल में क्यों नहीं दिखाते? ”

लड़के के पिता ने कहा- हम अभी अस्पताल से ही आ रहें हैं। दरअसल मेरा बेटा जन्म से ही अँधा था और आज ही उसको आंखें मिली हैं। आज वह, पहली बार इस संसार को देख रहा है।

हर व्यक्ति की अपनी एक कहानी होती है। सम्पूर्ण सच को जाने बिना किसी के भी व्यवहार के बारे में निर्णय नहीं करना चाहिए। हो सकता है कि जो दिख रहा है वह सम्पूर्ण सच न हो।

गलती

अगर आप समय पर अपनी

गलतियों को स्वीकार नहीं करते हैं

तो आप एक और गलती कर बैठते हैं।

आप अपनी गलतियों से तभी

सीख सकते है जब आप अपनी

गलतियों को स्वीकार करते हैं।

शरीफा शरवारी , +3 प्रथम वर्ष

नमक का दरोगा

लेखक – प्रेमचंद

https://youtu.be/ukr9ftyLgN4

यादों के गलियारों से

अभिभावकों के साथ बिताये हुये कुछ अविस्मरणीय क्षण

धन्यवाद